



मुर्गीपालन से कमाई

अर्पण उपाध्याय*, मारुफ अहमद**, अतीक अहमद* और निशी राय*

॥ मुर्गीपालन भूमिहीन लघु एवं सीमान्त कृषकों के लिए आय का एक उत्तम विकल्प है। इसे कृषक व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। मुर्गीपालन में लगने वाली लागत कम, जबकि मुनाफा कई गुना ज्यादा होता है। कुक्कुट मांस मानव आहार को संतुलित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन, खनिज और विटामिन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। कृषक इसे छोटे स्तर पर अहाता मुर्गीपालन से शुरू कर बड़े व्यावसायिक स्तर पर मुर्गी फार्म बनाकर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। प्रस्तुत सफलता गाथा में एक भूमिहीन कृषक श्री पवन का अनुभव है। इसमें वह कृषि विज्ञान केन्द्र, भरारी, झांसी के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में बैकयार्ड मुर्गीपालन की शुरुआत कर वर्तमान में 400 पक्षियों की क्षमता का शेड बनाकर मुर्गीपालन कर आय अर्जित कर रहे हैं तथा उचित प्रकार से अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं। ॥

*कृषि विज्ञान केन्द्र, झांसी (उत्तर प्रदेश); **कृषि विज्ञान केन्द्र, ललितपुर, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (उत्तर प्रदेश)

पवन (उम्र-25 वर्ष) जी भूमिहीन कृषक हैं, जो झांसी (उत्तर प्रदेश) जिले के बबीना विकासखंड के ढिकौली गांव के रहने वाले हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय में कम भूमि की आवश्यकता होने के कारण ये अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए मुर्गीपालन में रुचि रखते थे। वर्ष 2018 में ये कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के संपर्क में आये, जहां से इन्होंने केंद्र की प्रथम पंक्ति प्रदर्शन योजना के अंतर्गत 25 चेब्रो प्रजाति के 1 सप्ताह के चूजे प्राप्त किये तथा साथ ही बैकयार्ड मुर्गीपालन विषय पर इन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रकार इन 25 चूजों के साथ बैकयार्ड मुर्गीपालन की शुरुआत की।

इससे इन्हें 11200 रुपये की आमदनी प्राप्त हुई। इससे उनका हौसला बढ़ा एवं अपना स्वयं का व्यावसायिक मुर्गीफार्म बनाने का निश्चय किया। के.वी.के., झांसी के वैज्ञानिकों की निरंतर प्रेरणा और मार्गदर्शन से इन्होंने अब 400 मुर्गियों की धारणक्षमता का अपना छोटा पोल्ट्री फार्म स्थापित किया। इसमें ये ब्रॉयलर मुर्गी, चेब्रो एवं कड़कनाथ मुर्गियों का पालन कर आय अर्जित कर रहे हैं। वर्ष 2019-20 में इन्होंने 300 ब्रॉयलर चूजे अपने फार्म में डाले एवं डीप लिटर सिस्टम द्वारा ब्रॉयलर पालन शुरू किया। लिटर के रूप में लकड़ी के बुरादे की मोटी परत को बिछाया एवं लकड़ी के बुरादे को चूना पाउडर के भुरकाव से कीटाणुरहित किया गया। एक वर्ग

वर्ष 2021 में कृषक की आय-व्यय का विवरण

एक बैच में चूजों की संख्या = 200

एक वर्ष में चूजों के कुल बैचों की संख्या = 6

मुर्गियों में मृत्यु दर = 5 प्रतिशत
एक दिन के ब्रॉयलर चूजे का मूल्य (रुपये) = 25

मुर्गी आहार का औसत मूल्य (रुपये) = 32/कि.ग्रा.

2 कि.ग्रा. वजन प्राप्त करने में मुर्गी द्वारा खाया गया दाना = 3.5 कि.ग्रा.

विपणन के समय मुर्गी का भार = 2 कि.ग्रा.

विपणन के समय मुर्गी की आयु = 6 सप्ताह

ब्रॉयलर मुर्गी का विक्रय मूल्य (रुपये) = 150/कि.ग्रा.



मुर्गी फार्म का उचित प्रबंधन जरूरी

फीट प्रति ब्रॉयलर मुर्गी की दर से मुर्गियों को जगह दी। प्रकाश व्यवस्था के अंतर्गत ब्रूडिंग अवधि के दौरान 24 घंटे का प्रकाश उपलब्ध करवाया गया। उसके बाद विपणन तक प्रति दिन 23 घंटे प्रकाश और एक घंटे का अंधेरा दिया गया। यह एक घंटे का अंधेरा पक्षियों को बिजली की विफलता के मामले में अंधेरे में अनुकूल होने के लिए प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से दिया गया।

ब्रॉयलर मुर्गियों को एक दिन की आयु से लेकर मार्केटिंग तक तीन तरह का आहार दिया गया (0-2 सप्ताह: ब्रॉयलर प्री-स्टार्टर मैश, 3-4 सप्ताह: ब्रॉयलर स्टार्टर मैश एवं 5-6 सप्ताह: ब्रॉयलर फिनिशर मैश)। दिनभर मुर्गियों को पीने के लिए स्वच्छ जल दिया गया एवं ग्रीष्म ऋतु में जल में इलेक्ट्रॉल पाउडर भी मिलाया गया। 6 सप्ताह की आयु पर ब्रॉयलर मुर्गियां लगभग 2 कि.ग्रा. वजन हासिल कर लेती हैं एवं इस आयु पर उनका विवरण

किया गया। इस प्रकार उपरोक्त तकनीक को अपनाकर कृषक को 300 मुर्गियों से कुल 43400 रुपये की आय प्राप्त हुई। वर्ष 2021 में कृषक ने 200 ब्रॉयलर मुर्गियों के बैच का वर्ष में 6 बार मुर्गीफार्म में पालन किया एवं विपणन से कुल 171600 रुपये की वार्षिक आय प्राप्त की। वर्ष 2022 में कृषक ने 50 कड़कनाथ मुर्गियों एवं 200 ब्रॉयलर चूजों के पालन से कुल 57600 रुपये की वार्षिक आय प्राप्त की। मुर्गीपालन से प्राप्त उत्पादों-अंडे व मांस का विपणन भी कृषक द्वारा स्वयं ही गांव के स्तर पर किया जा रहा है। अपनी स्वयं की भूमि न होने पर कृषक ने मुर्गीपालन को आपदा में अवसर की तरह अपनाया एवं अपनी लगन एवं परिश्रम से अपने परिवार के भली प्रकार से भरण-पोषण के लिए आय अर्जित की है। श्री पवन से प्रेरणा पाकर गांव के अन्य युवक-युवतियां भी मुर्गीपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने में रुचि ले रहे

सारणी: मुर्गीपालन की आर्थिकी

क्र.सं.	विवरण	आय-व्यय (रुपये)
1	मुर्गी घर का मूल्य	50000.00
2	फीडर एवं ड्रिंकर का मूल्य	1000.00
3	एक दिन के 200 चूजों का मूल्य (25 रुपये प्रति चूजा)	5000.00
4	मुर्गी आहार पर खर्च (3.5 रुपये प्रति कि.ग्रा. प्रति चूजा)	22400.00
5	अन्य खर्च	1000.00
6	कुल खर्च	79400.00

लाभदायक मुर्गीपालन

फार्म का लाभ कार्यशील पूंजी (चूजों के क्रय, आहार पर एवं अन्य प्रबंधनों में लगी लागत) के आधार पर निकाला गया।

एक दिन के चूजे को वर्ष में 6 बार क्रय करने में लगी लागत (वार्षिक) = $200 \times 6 \times 25 = 30000$ रुपये

वर्ष में 6 बार आहार के क्रय में लागत (वार्षिक) = $22400 \times 6 = 134400$ रुपये

अन्य खर्चों में लागत (वार्षिक)= 6000 रुपये

कुल वार्षिक खर्च= 170400 रुपये

कुल विक्रय चूजे (वार्षिक) = 1140

चूजों के विक्रय से प्राप्त कुल वार्षिक आय (150 रुपये प्रति कि.ग्रा.) = 342000 रुपये

शुद्ध आय (वार्षिक) = 171600 रुपये

हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय का विस्तार कृषक के गांव एवं आसपास के गांवों में हो रहा है।